[illegible]

जनसत्ता 17 जुलाई, 2013: छोटे परदे पर इन दनिों समाचार चैनलों की बा-सी आई हुई है। खबरों की यह बा अपने साथ हमारी बुद्धि और समझ को भी अनायास बहाती ले जाती दखिाई दे रही है।

क ओर हमारी रुचि को तो ये चैनल प्रभावति कर ही रहे हैं, वहीं इन पर कई बार ववि‍केहीनता और उतावलेपन के भी उदाहरण देखने को मलि जाते हैं। अत्याधुनकि साधनों से संपन्न इलेक्ट्रॉनकि पत्रकारति में वचिार-पक्ष का जसि तरह अभाव दखिता है, उसे लेकर कभी-कभी बहुत पी़ा होती है। समाचार चैनलों पर चौबीसों घंटे लगातार, खबरों की गहराई में ग बगैर, सूचनाओं को मनमाने वश्लिेषण के साथ प्रसारति कयि जाना कसिी भी वचिारवान दर्शक या व्यक्ति के भीतर क्षोभ पैदा कर सकता है। समाचार चैनलों के लि खबर क डबल-रोटी के टुक की तरह होती है। चौबीस घंटे चैनल का पेट भरने के लि पूरी रात चबाते रहना ंकरों की मजबूरी होती है। संवाददाता ने अगर कोई रसीली खबर भेज दी है तो फरि क्या है, लगातार उसे च्युइंगम की तरह चबाते रहना है, भले ही उसका स्वाद खत्म हो जा। इन्हीं अवसरों को भुनाने के चक्कर में ऐसे-ऐसे कार्यक्रम परोसे जाते हैं क सिर धुनने के अलावा कोई रास्ता नहीं दखिाई देता।
अंधवश्विास और भूतप्रेत से संबंधति ऊलजलूल कार्यक्रमों की बात छो भी दें और केवल समाचार आधारति कार्यक्रमों की बात करें तो अधकितर चैनल खबर को पूरी तरह खबर बनने के पहले ही उसका वश्लिेषण प्रारंभ कर देते हैं। ज्वालामुखी फूटा नहीं क वशिेषज्ञों से पूछा जाने लगता है क लावे का तापमान और उससे नकिलने वाली ऊर्जा कतिनी होगी; लावा क्या कभी ठंडा भी होगा या नहीं; वह बहता हुआ कहां तक जा गा; भारत के लोगों को इन परस्थितियों में क्या-क्या सावधानयिां बरतनी चाहि; प्रभावति लोगों के पुनर्वास में सरकार की क्या भूमकिा होगी; ज्वालामुखी के फटने से कनि राजनीतकि पार्टयिों को लाभ मलिेगा... आदि।
शेखचल्लिी की कहानी की तरह हवाई और बेतुका वश्लिेषण घंटों चलता रहता है। कसिी मनोरंजक कार्यक्रम की तरह ये चैनल दर्शकों को बांधे जरूर रखते हैं, लेकनि उनके ववि‍ेक और वचिारशीलता पर ताला डाल देते हैं। समाचार चैनलों के ंकरों के अपरपिक्व मस्तष्कि सामने बैठे वचिारकों, वशिेषज्ञों पर क तरह से आक्रमण करते दखिाई देते हैं। उनके मुंह से अपने शब्द कहलवाने की कोशशि में कई बार वे अभद्रता की हद तक पीछे प नजर आते हैं। अपने मतलब का काध शब्द वशिेषज्ञ वचिारक की जुबान से फसिलते ही वे उसे लपक लेते हैं और उसे पूरी तत्परता के साथ अधकिृत घोषणा में तब्दील कर दयिा जाता है।
दरअसल, पत्रकारति जैसे महत्त्वपूर्ण पेशे, खासतौर पर टीवी पत्रकारति को बाजारवाद की चकाचौंध ने अपनी गरिफ्त में ले लयिा है। समाचार और सूचना को भी अब चैनलों द्वारा वस्तु की तरह बेचा जा रहा है और इस व्यापार में वचिारशीलता, ववि‍ेक और सहष्णिुता जैसे मूल्यों-गुणों को बहुत हद तक नजरअंदाज करने में कोई गुरेज नहीं है। यह स्थति न सर्फि पत्रकारति के लि, बल्कि हमारे बौद्धकि वकिास के लि भी कुछ ठीक नहीं कही जा सकती!

[illegible] https://www.facebook.com/Jansatta
[illegible] https://twitter.com/Jansatta